भूमिका

'धूमिल का काव्य और यथार्थवाद' नामक प्रस्तुत शोध प्रबंध में समकालीन हिंदी काव्य जगत् के श्रेष्ठ कवि सुदामा पांडेय 'धूमिल' के काव्य-संसार का यथार्थपरक अध्ययन किया गया है। धूमिल ने हिंदी कविता को अपनी शाब्दिक अभिव्यंजना द्वारा एक नई दृष्टि एवं चेतना प्रदान की है; जिससे हिंदी के कतिपय समीक्षकों ने उन्हें 'शब्दों का जादूगर' कहा है।

समकालीन कवियों के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में धूमिल सर्वाधिक प्रिय कवि रहे हैं। उनकी कविताएँ युवा पाठकों के लिए हमेशा प्रेरक तत्त्व रहीं हैं। 'धूमिल का काव्य-संसार' नामक एम. फिल के लघु शोध प्रबंध लेखन के दौरान महसूस किया गया है कि लघु शोध की अपनी सीमाएँ होती हैं। वहाँ विस्तार में जाकर कवि से संबंधित सभी पक्षों का अध्ययन करना मुमकिन नहीं है। लघु शोध प्रबंध लिखने के दौरान ही मन में धूमिल के काव्य और यर्थाथवाद पर विशेष अध्ययन करने का विचार पनपा था। उसी वैचारिक चिंतन एवं मनन का प्रतिफलन प्रस्तुत शोध प्रबंध है। धूमिल के काव्य पर अनेकानेक शोध प्रबंध और आलोचना ग्रंथ उपलब्ध हैं; जिनमें हुकुमचंद राजपाल, बी. डी. मिश्र, चमनलाल गुप्त, राहुल, राकेश, मंजुल उपाध्याय आदि का कार्य महत्त्वपूर्ण है। पर वे भी यथार्थवाद को केंद्र में रख कर धूमिल के काव्य का मूल्यांकन प्रस्तुत नहीं कर सके हैं।

विवेच्य शोध प्रबंध में धूमिल के काव्य में यथार्थवाद के प्रतिफलन का अनुसंधानात्मक प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में 'धूमिल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर प्रकाश डाला गया है ; जिसमें उनके जन्म, शिक्षा, परिवेश, व्यक्तित्व और युगीन परिवेश तथा उनके रचनाओं का विहंगावलोकन किया गया है।

यथार्थवाद : द्वितीय अध्याय 'यथार्थवाद : दर्शन एवं सिद्धांत' में यथार्थवाद की अवधारणा एवं स्वरूप को बतलाते हुए उसकी प्रमुख विशेषता तथा उसके विभिन्न रूपों की विवेचना की गई है।

'यथार्थवाद और धूमिल का काव्य' नामक तृतीय अध्याय में प्रकृतिवादी यथार्थवाद, आलोचनात्मक यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद तथा साम्यवादी यथार्थवाद आदि का विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'यथार्थवाद और धूमिल की काव्य कला' के अंतर्गत काव्य कल्पना, रचनात्मक यथार्थ के साथ-साथ यथार्थ की कलात्मक प्रतिबिंबन आदि प्रतिमानों की चर्चा की गई है। यही नहीं, अनुषंग रूप में युगबोध तथा प्रतिबद्धता की विवेचना भी उनके काव्य संसार के आलोक में की गई है।

शोध प्रबंध के पंचम अध्याय 'धूमिल का काव्य:भाषा, शैली तथा शिल्प विधान' के अंतर्गत उनकी काव्यभाषा, काव्य-शैली तथा छंद विधान के साथ साथ शिल्प विधान संबंधी विवेचना धूमिल के काव्य संसार के आधार पर की गई है।

'समकालीन कविता और यथार्थवाद के संदर्भ में धूमिल का योगदान' नामक उपसंहार रुपी षष्ठ अध्याय के अंतर्गत धूमिल का काव्य परंपरा और प्रभाव तथा समकालीन कविता में धूमिल का योगदान एवं उपलब्धियाँ जैसे विषय पर चर्चा की गई है। साथ ही यह महसूस किया गया है कि लीलाधर जगूड़ी, वेणुगोपाल और चंद्रकांत देवताले आदि ने उनके जीवनकाल में ही उनकी व्यंग्य शैली तथा सपाटबयानी को अपनाने का सार्थक प्रयास किया है। साथ-ही-साथ धूमिल के काव्य का प्रभाव परवर्ती पीढ़ी के युवा रचनाकारों - राजेश जोशी, अरुण कमल, मनमोहन, बोधिसत्व आदि के काव्य सृजन में परिलक्षित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मेरी प्रेरणा के सबसे महत्त्वपूर्ण आधार मेरे आदरणीय गुरुवर डॉ. रोहिताश्व (विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय) रहे हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध उनके स्नेह और सान्निध्य की छाया में पूर्ण हो सका है। उन्होंने न केवल विषय चयन एवं रूपरेखा के निर्माण में सहायता की है; बल्कि प्रस्तुत सामग्री की उपलब्धि तक में उन्होंने अपार सहृदयता एवं अतिउदारता का परिचय दिया है। मैं नि:संकोच कह रहा हूँ कि उनकी सहायता, परामर्श एवं मार्ग निर्देशन के बिना यह कार्य संभव नहीं था।

गोवा विश्वविद्यालय के अन्यान्य वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक वर्ग के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहूँगा। विशेषकर डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र, डॉ. इशरत खान, डॉ. वृषाली मांद्रेकर आदि का विशेष सहयोग भी प्राप्त हुआ है। हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय द्वारा

आयोजित राष्ट्रीय सेमिनारों , कार्यशाला एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आदि में देश भर के विभिन्न विद्वानों का आगमन होता रहा है; जिनसे विचार-विमर्श का अवसर प्राप्त होता रहा है; उनमें डॉ. नामवर सिंह (दिल्ली), डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित (लखनऊ) डॉ. नारायण शर्मा (औरंगाबाद) डॉ. अर्जुन चव्हाण(कोल्हापुर), डॉ. रतनकुमार पांडेय (मुम्बई), डॉ. काशीनाथ सिंह (वाराणासी) आदि मुख्य हैं।

प्रस्तुत शोधप्रबंध के सिलसिले में हमने बनारस और इलाहबाद की कई बार यात्राएँ की है। इन यात्राओं में प्राय: उन सभी लोगों से मिला; जो धूमिल के आत्मीय मित्र और निकट संबंधी थे। इन लोगों से हमें धूमिल के व्यक्तित्व और उनके काव्य को समझने में भरपूर मदद मिली। उन्हीं लोगों के माध्यम से धूमिल के व्यक्तित्व को भली-भाँति जाना गया। सहयोगी लोगों के नाम इस प्रकार हैं - डॉ. बच्चन सिंह, डॉ. त्रिभुवन सिंह, डॉ. वाचस्पति, डॉ. अवधेश प्रधान, वशिष्ठमुनि ओझा (वाराणसी), आचार्य पंकज, कैलाश सिंह, डॉ विश्वनाथ सिंह, डॉ. सदानंद सिंह (हरहुआ-वाराणसी), कन्हैया पांडेय, धूमिल की चाची प्रभावती देवी, कवलजीत सिंह, देवीशंकर सिंह, पूर्वप्रधानाचार्य राजेश्वरी सिंह, भगेलूसिंह (खेवली - वाराणसी) डॉ. रामचन्द्र शुक्ल, मार्कण्डेय (इलाहाबाद) आदि लोगों के प्रति आदरपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ। इनके अतिरिक्त धूमिल के ज्येष्ठ पुत्र डॉ. रत्नशंकर पांडेय को विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगा; जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर इन सभी लोगों से साक्षात्कार करने-करवाने में हमारी भरपूर मदद की। उनके परिवार व पत्नी श्रीमती सुधा पांडेय का शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने अपने घर में रहने की आवश्यक सुविधा प्रदान की।

सभी सहयोगी महानुभावों का उल्लेख हमारे लिए संभव नहीं है। अत: उन सभी के प्रति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आभारी हूँ; जिनका नामोल्लेख नहीं हो पाया है। इनके अतिरिक्त विभागीय कर्मचारी यशवंत नाईक, लाइब्रेरियन सी. आर. नाईक आदि जिसने समय-समय पर विभिन्न ग्रंथों को तलाशने, प्राप्त करने-करवाने में सहयोग देते रहे हैं। डॉ. रामकृष्ण हलर्णकर, संदीप लोटलीकर, श्रीमती जैनेट जैसे साथियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। सुबास पांडेय और आर. के. यादव (केंद्रीय विद्यालय, वास्को) के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ; जिन्होंने विभिन्न विद्वानों से लिए गए साक्षात्कार को शुद्ध रूप देने में सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर मैं अपने पूज्य माता-पिता रामलछन और प्रभावती देवी को अत्यंत श्रद्धा एवं आदर के साथ स्मरण कर रहा हूँ; जो मेरे अध्ययन और चिंतन के लिए सदैव प्रेरक एवं आराध्य रहे हैं। अपनी जीवन संगिनी 'आशा देवी' के मौन तप तथा प्रतीक्षा का सहयोग मूल्य मेरे लिए वर्णनातीत है। शोधकार्य के टंकण लेखन कर्ता श्रीमती गौरी केळकर, (कलाकृति, सांत इनेज, पंजिम, गोवा) को धन्यवाद अर्पित करना चाहता हूँ; जिसने बड़ी तत्परता के साथ कम समय में टंकण कार्य पूर्ण करके इस पुनीत कार्य में महत्त्वपूर्ण योगदान

दिया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध काव्यालोचन के क्षेत्र में विनम्र प्रयास है। कार्य पूर्ण रोमांचक रहा है। आशा है कि यह शोध कार्य अपनी सीमाओं में 'यथार्थवाद और धूमिल का काव्य' जानने में सहायक उपादन बन सकेगा।

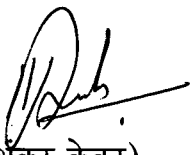

(रमाशंकर केवट)